

भारत सरकार
परमाणु ऊर्जा विभाग
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 2020
जिसका उत्तर दिनांक 03.07.2019 को दिया जाना है

द्विपक्षीय परमाणु समझौता

2020. श्री एन. के. प्रेमचन्द्रन :

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या सरकार ने परमाणु आपूर्तिकर्ता देशों के साथ द्विपक्षीय समझौता किया है अथवा करने का विचार कर रही है, और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (ख) क्या विगत तीन वर्षों के दौरान भारत ने अन्य देशों के साथ सिविल परमाणु कार्यक्रमों के लिए न्यूक्लियर पाँवर के विनिमय हेतु विचार-विमर्श किया है तथा यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (ग) विगत पाँच वर्षों के दौरान अन्य देशों के साथ सिविल न्यूक्लियर पाँवर के लिए हुए समझौते से संबंधित ब्यौरा क्या है;
- (घ) क्या भारत का असैन्य कार्यक्रमों के लिए नई न्यूक्लियर पाँवर टेक्नोलॉजी अपनाने का विचार है तथा यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (ङ) क्या सरकार का चुनौतियों का सामना कर रहे महंगे तथा अनडस्टेड रिएक्टर की खरीद के स्थान पर स्वदेशी नाभिकीय संयंत्र प्रौद्योगिकी प्राप्त करने के लिए अनुसंधान तथा विकास (आरएंडडी) शुरू करने का विचार है; और
- (च) यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है ?

उत्तर

राज्य मंत्री, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन तथा प्रधान मंत्री कार्यालय (डॉ. जितेन्द्र सिंह):

- (क) भारत ने सत्रह (17) देशों के साथ अन्तर-सरकारी करार (आईजीए) किए हैं जिनमें से कुछ नाभिकीय आपूर्तिकर्ता देश हैं ।
- (ख) जी, हाँ । भारत ने पिछले तीन वर्षों के दौरान यूएसए, फ्रांस और रूस के साथ विचार-विमर्श किए हैं ।
- (ग) भारत ने पिछले पाँच वर्षों के दौरान छः देशों - ऑस्ट्रेलिया, श्रीलंका, जापान, यूनाइटेड किंगडम, वियतनाम और बांग्लादेश के साथ अन्तर-सरकारी करार (आईजीए) किए हैं ।
- (घ) यूरेनियम और प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थोरियम निक्षेपों के उपयोग के माध्यम से देश की दीर्घकालीन ऊर्जा सुरक्षा और आत्म-निर्भरता प्राप्त करने के लिए भारत का त्रि-चरणीय नाभिकीय विद्युत कार्यक्रम बनाया गया है ।

ये तीन चरण हैं :

1. प्राकृतिक यूरेनियम ईंधन युक्त दाबित भारी पानी रिएक्टर (पीएचडब्ल्यूआर) ।
2. प्लूटोनियम आधारित ईंधन का उपयोग करके द्रुत प्रजनक रिएक्टर (एफबीआर) ।
3. थोरियम के उपयोग के लिए प्रगत नाभिकीय ऊर्जा प्रणाली ।

प्रथम दो चरण के रिएक्टरों - नाभिकीय यूरेनियम ईंधन युक्त भारी पानी रिएक्टरों (प्रथम चरण) और प्लूटोनियम ईंधन युक्त द्रुत प्रजनक रिएक्टरों (द्वितीय चरण) का प्रयोजन, भारत के सीमित यूरेनियम संसाधनों से पर्याप्त विखंड्य सामग्री का उत्पादन करना है ताकि नाभिकीय विद्युत कार्यक्रम के तृतीय चरण में हमारे पास प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थोरियम निक्षेपों का पूर्णतया उपयोग किया जा सके । कार्यक्रम के तीसरे चरण में स्व-समर्थित प्रगत नाभिकीय ऊर्जा प्रणाली में थोरियम के वृहद् संसाधनों का उपयोग कर विद्युत उत्पादन के लिए थोरियम-232-U-233 ईंधन का उपयोग किया जाएगा और इस प्रकार दीर्घकालीन ऊर्जा सुरक्षा और स्वावलंबन सुनिश्चित हो सकेगा ।

(ड) जी, हाँ । उपरोक्त (घ) में दिए अनुसार, विभाग (डीएई) में प्रगत नाभिकीय ऊर्जा प्रणाली के विकास के लिए स्वदेशी अनुसंधान एवं विकास (आरएंडडी) गतिविधियाँ पहले से ही चल रही हैं तथा (च) ताकि त्रि-चरणीय नाभिकीय विद्युत कार्यक्रम के अनुरूप देश की दीर्घकालीन ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके ।
